प्राचीनाभिलेखाः

PRACHINABHILEKHAH :

[मध्यप्रदेश के विश्वविद्यालयों के एम.ए. (संस्कृत) का पाठ्य ग्रन्थ]

लेखक – सम्पादक

प्रोफेसर डॉ. भागचन्द्र जैन 'भागेन्दु'

[पूर्व सचिव, मध्यप्रदेश शासन संस्कृत अकादेमी]

डायरेक्टर

संस्कृत, प्राकृत तथा जैन विद्या अनुसन्धान केन्द्र

दमोह (म.प्र.)

प्रकाशक

अनन्त छवि न्यास

28, सरस्वती नगर, दमोह (म.प्र.) 470-661

दूरभाष 07812-221135

2004 ईस्वी

शिलोलेखोऽयं संसूचयति यन्मात्र-त्रयोदश-वर्षस्य शासनकाले श्रीखारवेलः कलिङ्गस्यैतावर्तीं सर्वतोमुखोन्नतिं व्यदधात् तेनैतद् वक्तुं पार्यते यद्-तादृशः नृपः 'न भूतो न भविष्यति ।' विदुषां सुनिश्चितमिदम्मतं यत् त्रयोदश-वर्षस्य शासनान्तरमपि बहुवर्षावधिं सः जीवितः सन् राज्यमकरोत् किन्तु तस्यावशिष्टस्य राज्यकालस्यैतादृग्-विवरणाङ्कितकरणस्यावसरात्प्रागेव सो महान् सम्राट् दिवंगतोऽभवत् इति।

श्रीखारवेलस्य कलाकृतीनामवशेषान्समीक्ष्य कलाधुरीणाः तेन निर्मापितानां गुहामन्दिराणां स्थ त्यं मूर्तिफलकानाञ्च निरौपम्यं भव्यसौन्दर्यञ्च घोषयन्ति।

एतादृशस्य महामहिमामण्डितस्य **सम्राड्-खारवेलस्याभिलेखोऽधस्ताद् दीयते** -

1. (अ): सम्राड् खारवेलस्य हाथीगुम्फा ऽभिलेखः

(मूलपाठ, संस्कृत- च्छाया, शब्दार्थ एवं हिन्दी-अनुवाद)

मूलपाठ – १. नमो अरहंतानं [।] नमो सवसिधानं [।] ऐरेन महाराजेन महामेघवाहनेन चेति-राजवंस-वधनेन पसथ-सुभ-लखनेन चतुरंतलुठित गुनोपहितेन कलिंगाधिपतिना सिरिखारवेलेन।

संस्कृत छाया – १. नमोऽर्हद्भ्यः [।] नमः सर्वसिद्धेभ्यः [।] ऐलेण महारायेन महामेघवाहनेन चेदिराज वंशवर्धनेन प्रशस्तशुभलक्षणेन चतुरंतलुठितगुणोपहितेन कलिङ्गाधिपतिना श्रीखारवेलेन।

शब्दार्थ – नमो = नमस्कार [।] **अरहंतानं** = अर्हतों को [।] **सवसिधानं** = समस्त सिद्धों को। **ऐरेण** = आर्येण (कुछ विद्वानों के मत में- ऐल अर्थात चन्द्रवंश)। **महाराजेन** = महाराज (के द्वारा)। **महामेघवाहनेन** = महामेघवाहन (के द्वारा)। **चेतिराजवसवधनेन** = चेदिराज वंशवर्द्धन (चेदिराजवंश की वृद्धि करने वाले)। **पसथ** = प्रशस्त। **सुभलखनेन** = शुभ लक्षण वाले। **चतुरंतलुठितगुनोपहितेन** = चारों दिशाओं तक व्याप्त गुणों वाले। **कलिंगाधिपतिना** = कलिंगाधिपति। **सिरिखारवेलेन** = श्री खारवेल के द्वारा।

हिन्दी-अनुवाद – अर्हंतों को नमस्कार। समस्त सिद्धों को नमस्कार। आर्य (ऐर), महाराज, महामेघवाहन, चेदिराज वंशवर्द्धन, प्रशस्त और शुभ लक्षण वाले, चारों दिशाओं (चतुरंत) में व्याप्त (विख्यात) गुणों वाले, कलिंगाधिपति श्री खारवेल के द्वारा।

मूलपाठ – २. पंदरसवसानि सिरि-कडारसरीरवता कीडिता कुमार कीडिका [।] ततो लेख - रूप - गणना - ववहारविधि - विसारदेन सवविजा - वदातेन नव वसानि योवराजं पसासितं [।] संपुंण चतुवीसतिवसो तदानि वधमानसेसयोवेनाभिविजयो ततिये।

4

खजुराहो - अभिलेखः :

परिचितिः :

खजुराहो विश्वप्रसिद्धः कलाकेन्द्रो सम्प्रति मध्यप्रदेशस्य छतरपुरमण्डले विद्यते । अत्र वैदिकसंस्कृतेः जैनसंस्कृतेश्चानेकानि मन्दिराणि विश्वविख्यातानि सन्ति । अत्रत्य जैनमन्दिरसमूहे 'पार्श्वनाथमन्दिरं' (दशम शताब्दी) श्रेष्ठतममद्धितीयञ्चास्ति । अस्य मन्दिरस्य प्रवेश-द्वारस्य दक्षिणेतरे पक्षे द्वादशपंक्तीनामेकोऽभिलेख उत्कीर्णोऽस्ति । अस्मिन्नभिलेखे मन्दिरस्य प्रतिष्ठाकालः संवत् 1011 अंकितोऽस्ति । अस्य मन्दिरस्य निर्माणं चन्देलवंशीयनरेशधंगस्य शासनकाले श्रीपाहिल-नामा श्रेष्ठी अकारयत् । अस्मिन्नभिलेखे पाहिलो नाम श्रेष्ठी स्वकीयविनम्रतायाः निरभिमानवृत्तेश्च परिचयमित्थं ददाति- यः कश्चिज्जनो वंशो वाऽऽगामिनि कालेऽस्य मम मन्दिरस्य वाटिकानाञ्च संरक्षणं व्यवस्थापनं वा कारयेदहं तस्य दासानुदासोऽस्मि ।

अभिलेखस्यास्य मूलपाठोऽधस्ताद् दीयते - (खजुराहो-पार्श्वनाथमन्दिराभिलेखः) -

(पार्श्वनाथ मन्दिरस्य द्वारस्योपरि वामपक्षेऽभिलेखः सम्वत् १०११, भाषा-संस्कृतं, लिपिः नागरी.)

1. ओं (॥*) सम्वत् १०११ समये ॥ निजकुलधवलोयं (ऽयं) दि -
2. व्यमर्त्ति (ः) स्वसी (शी) ल (ः) स (श) मदमगुणयुक्त (ः) सर्व्व -
3. सत्वा (त्त्वा) नुकंपी (।*) स्वजनजनिततोषो धांगराजेन
4. मान्य (ः) प्रणमति जिननाथोयं (ऽयं) भव्यपाहिल (ल्ल) -
5. नामा । (॥) १ ॥ पाहिलवाटिका १ चन्द्रवाटिका २
6. लघुचंद्रवाटिका ३ सं. (शं) करवाटिका ४ पंचाई (य) -
7. तल (तन) वाटिका ५ आम्रवाटिका ६ ध (धं) गवाडी ७ (॥*)
8. पाहिलवंसे (शे) । तु क्षये क्षीणे अपरवंसो (शो) यः कोपि (ऽपि)
9. तिष्ठति (।*) तस्य दासस्य दासोयं (ऽयं) मम दत्तिस्तु पाल -
10. येत् ॥ महाराजगुरु सी (श्री) वासवचन्द्र (ः) (॥*) (वैसा) (शा) (ष) (ख)
11. सुदि ७ सोमदिने ॥[१]

अर्थ :

पंक्ति 1-4 : पंच परमेष्ठी मंगल ... । संवत् १०११ वें वर्ष में । भव्य पाहिल जिननाथ को नमस्कार करता है, जो अपने कुल में श्रेष्ठ है, दिव्य मूर्ति है, शीलवान् है, समता और इन्द्रियदमन के गुणों से युक्त है, सब जीवों पर दया करने वाला है, अपने परिवार के सभी स्वजनों को सन्तुष्ट कर दिया है और धंग नरेश द्वारा मान्य है ।

पंक्ति 5-7 : (इस मन्दिर के लिए) पाहिलवाटिका, चन्द्रवाटिका, लघुवाटिका, शंकरवाटिका, पंचाईतल (पंचायतन) वाटिका, आम्रवाटिका और धंगवाड़ी (इन सात वाटिकाओं का दान करता हूँ ।)

अभिलेखस्य मूलपाठोऽधस्ताद्

[अहारक्षेत्रे शान्तिनाथ-प्रतिमाभिलेखः, स ...षा-संस्कृतम् , लिपिः - नागरी

पंक्ति 1- ॐ नमो वीतरागाय ॥ ग्र (गृ)हपतिवंशसरोरु (रु)हसहस्र रस्मिः (रश्मिः) सहम् (स्र) कूटं यः । वाणपुरे व्यधितासीत् स्री (श्री) मानि -

पंक्ति 2- ह देवपाल इति ॥१॥ श्री रत्नपाल इति तत्तनयो वरेण्यः । पुण्यैक मूर्तिरभवद्वसु हाटिकायां । कीर्ति(र्ज्जगत्रय)

पंक्ति 3- परिभ्रमणनु (श्र)मार्त्ता यस्य स्थिराजनि जिनायतनच्छलेन ॥२॥ एकस्तावदनून बुद्धि निधिना श्री(श्री) शांति चैत्यात (ल)

पंक्ति 4- यो दिश्यात्तं (न्नं)दपुरे परः परनरानन्दप्रदः श्री (श्री)मता । येन श्री (श्री) मदनेस(श)सागरपुरे तज्जन्मनो निर्म्ममे। सोयं(सोऽयं) श्रे(श्रे)ष्ठि वरिष्ठ गल्हण इति श्री (श्री) रल्हणाख्याद

पंक्ति 5- भूत् ॥३॥ तस्मादजायत कुलाम्बर पूर्णचन्द्रः श्री (श्री) जाहडस्तदनुजोदय चं(द)नामा । एकः परोपकृतिहेतुकृतावतारो धर्म्मात्मकः पु(व)नरमो -

पंक्ति 6- घ सुदानसारः ॥४॥ ताभ्यामशेष दुरितौघस(श)मैकहेतु निर्मापितं भुवनभूषणभूतमेतत् । श्री शान्तिचैत्यमति(मिति) नित्यसुखप्रदा

पंक्ति 7- त्(नात्) मुक्तिश्रि (श्रि)यो वदन वीक्षण लोलुपाभ्याम् ॥एज॥ ॥५॥ छ छ छ संवत् १२३७ मार्ग्गसुदि ३ सुक्रे (शुक्रे) स्री (श्री)मत्परमाडिदेव विजयराज्ये ।

पंक्ति 8- चंद्रभास्कर समुद्रतारका यावदत्र जनचित्तहारकाः ।

धर्मकारिकृत सु (शु) द्ध कीर्तनं तावदेव जयतात् सुकीर्तनं (म्) ॥६॥

पंक्ति 9- दाल्हणास्य सुतः श्रीमान् रूपकारो महामतिः ।

पापटो वास्तुशास्त्रज्ञस्तेन बिम्बं सुनिर्म्मितं (तम्) ॥७॥'

पाठकानां सौविध्यर्थम्

अहाराभिलेखस्य पद्यानुसारि- संशोधित-पाठोऽत्र प्रस्तूयते -

नमो वीतरागाय ।

गृहपतिवंश-सरोरुह-सहस्र रश्मिः सहस्रकूटं यः ।
बाणपुरे व्यधितासीत् श्रीमानिह देवपाल इति ॥१॥

मदनेशसागरपुर नगर की विशालता का बोध होता है। वसुहाटिका मदनेशसागरपुर नगर का उपनगर या वार्ड हो सकता है। यह नहीं कहा जा सकता कि मदनेशसागरपुर नगर के नष्ट भ्रष्ट किये जाने के बाद मदनेशसागरपुर का वसुहाटिका नाम रखा गया।[2]

मदनेशसागरपुर :

रल्हण के पुत्र श्रेष्ठियों में प्रमुख **गल्हण** ने दो मंदिर बनवाये थे। इनमें एक शान्तिनाथ मन्दिर का निर्माण उसने अपने जन्मस्थल श्री **मदनेशसागरपुर** में कराया था। यह मंदिर वर्तमान में जहाँ स्थित है, वह स्थान **अहार** के नाम से विश्रुत है। संवत् १२०९ में अहार में प्रतिष्ठापित नेमीनाथ-प्रतिमा के लेख में इस नगर का नामोल्लेख मदनसागरपुर हुआ है। इस साक्ष्य के आलोक में यह नगर संवत् १२०९ में मदनसागरपुर नाम से विश्रुत रहा ज्ञात होता है। यह नाम संवत् १२८८ के एक प्रतिमालेख में भी आया है। **अहार के विशाल सरोवर को आज भी मदनसागर कहा जाता है।** अतः निष्कर्ष रूप से ज्ञात होता है कि अहार ही अतीत में मदनसागरपुर और मदनेशसागरपुर नाम से प्रसिद्ध रहा है।

नन्दपुर :

प्रस्तुत प्रतिमालेख की चौथी पंक्ति में रल्हण के पुत्र गल्हण द्वारा दूसरा शान्तिनाथ मन्दिर इस नगर में बनवाये जाने का उल्लेख है। इसे तन्दपुर और कंदपुर भी पढ़ा जा सकता है। अहार के पास कन्नपुर नामक ग्राम है, न तन्दपुर है और न कंदपुर। अतः नन्दपुर स्वीकार करना अधिक तर्कसंगत प्रतीत होता है।

अहार के पास नारायणपुर नामक ग्राम है। यहाँ एक प्राचीन मंदिर भी है। मंदिर में प्राचीन प्रतिमा नहीं है। संभवतः सिर तोड़ दिये जाने से उसे वेदिका से कहीं अन्यत्र रख दिया गया हो।

प्रतिष्ठाचार्य श्री पं. गुलाबचन्द्र 'पुष्प' से ज्ञात हुआ है कि झांसी-सोजना मार्ग पर सोजना से चार किलोमीटर दूर उत्तर पूर्व कोण में **नावई** नामक स्थल है जिसे आज **नवागढ़** कहते हैं। यहाँ शान्ति, कुन्थु, अरह तीर्थंकरों की भग्न प्रतिमाएं हैं। शान्तिनाथ प्रतिमा की अवगाहना लगभग सात फुट है। एक स्तम्भ पर श्रेष्ठी रल्हण -गल्हण के नाम भी उत्कीर्ण हैं। यह यादवों की बस्ती है। पंडित 'पुष्प' जी का अनुमान है कि अतीत में इसे नन्दपुर कहा जाता रहा है। नावई और नवागढ़ नाम बाद में कभी विश्रुत हुए हैं। यादवों का आवास स्थल होने से श्री 'पुष्प' जी का अनुमान ठीक प्रतीत होता है। शान्ति कुंथु अरह प्रतिमाओं तथा रल्हण गल्हण के नाम प्राप्त होने से यहाँ मन्दिर के होने तथा उसका निर्माण रल्हण के पुत्र गल्हण द्वारा कराये जाने का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। **इस प्रकार नवाई/नवागढ़ को नन्दपुर से समीकृत किया जा सकता है।**

सहस्रकूट :

यह एक ऐसी रचना होती है जिसमें गन्धकुटियों में १००८ प्रतिमाएँ विराजमान रहती है।